5MKCHG

पाठ–20

मस्जिद या पुल

– सुनीति

मुगल बादशाह अकबर भारत के लोकप्रिय शासक थे। प्रजा का सर्वाधिक हित उनके शासन का प्रथम उद्देश्य था। वे जनता के बीच वेश बदलकर उसकी कठिनाइयों का पता लगाते थे। वे धार्मिक प्रवृत्ति के थे किन्तु जनता की कठिनाइयों को दूर करने को अधिक महत्व की बात मानते थे। जब उनके सामने प्रश्न उपस्थित हुआ कि किसी स्थान पर 'मस्जिद और पुल' दोनों में से क्या बनवाया जाए तो उन्होंने जन–कल्याण को ध्यान में रखकर पुल बनवाया। लोकप्रिय शासकों को सदा जनता की सुख–सुविधाओं पर ध्यान पहले देना चाहिए। सम्राट अकबर ने वही किया।

इस पाठ में हम सीखेंगे– सर्वनाम शब्द और उनका प्रयोग, वाक्य परिवर्तन।

दीन–ए–इलाही, गरीब नवाज़, शहंशाह–ए–आलम, महान बादशाह अकबर की अगवानी में जौनपुर के सूबेदार मुबारक खान ने जमीन–आसमान एक कर दिया। यह उसकी बरसों पुरानी साध थी। बरसों से वह लगातार बादशाह को जौनपुर आने के लिए न्यौते–पर–न्यौता देता चला आ रहा था, मगर बादशाह की जान को बड़े झमेले थे। उस दिन भी बड़ी मुश्किल से उन्हें उधर जाने का मौका मिल पाया था।

बादशाह के पास समय बहुत कम था। हाथी की पीठ से उतरकर उन्होंने अभी दो घड़ी आराम भी न किया था कि सूबेदार मुबारक खान बादशाह को गोमती के किनारे दूर–दूर तक फैले उस लंबे–चौड़े मैदान में ले गया, जहाँ मस्जिद बनाने की योजना थी। वहाँ जाकर उसने बादशाह को मस्जिद का नक्शा दिखाया। इस नक्शे को दिखाने के लिए वह बरसों से बेकरार था।

बादशाह ने नक्शे को बड़े ध्यान से देखा। उसे देखकर बादशाह की बाँछें खिल गईं। उन्होंने कहा, ''बेशक, नक्शा बहुत खूबसूरत है मुबारक खान! आसमान को चूमने वाली इसकी ऊँची–ऊँची मीनारें, निराले गुंबद, खुला तालाब, सब–के–सब बेमिसाल हैं। हमारा खयाल है कि खुदा के लाखों बंदे इसमें बैठकर अल्लाहताला से दुआ करेंगे और सुकून पाएँगे।''

''जी आलमपनाह, यह खूबसूरत और बेमिसाल मस्जिद दुनिया भर में हुजूर की दीनदारी और गरीबपरस्ती का डंका पीट देगी'', मुबारक खान ने झुककर आदाब बजाते हुए कहा। अकबर खुश होकर वहाँ से लौटे। अकबर महान थे। वे हमेशा अपनी प्रजा के दुख–सुख का ख्याल रखते थे। वे वेश बदलकर प्रजा के अंदरूनी हालात का पता लगाते रहते थे। उस दिन भी वे शाम होते ही वेश बदलकर गोमती के किनारे घूमने निकले।

शिक्षण–संकेत– कक्षा में बादशाह अकबर की धार्मिक सहिष्णुता की चर्चा करें। मस्जिद और पुल की चर्चा करते हुए बच्चों को पाठ से जोड़ें तथा कहानी का सारांश बताएँ। फिर एक–एक बच्चे से कहानी का थोड़ा–थोड़ा भाग पढ़वाएँ। कठिन शब्दों के अर्थ बताते जाएँ। अंत में पाठ में आए चरित्रों पर कक्षा में चर्चा करें।

घूमते–घूमते एक जगह अकबर को किसी औरत के रोने की आवाज सुनाई दी। अकबर आवाज की ओर चलते हुए गोमती के किनारे नाव के पास आ पहुँचे। उन्होंने देखा कि नाव के पास एक अस्सी–नब्बे साल की काली और छोटे कद की बुढ़िया अपनी गठरी थामे पार जाने के लिए खड़ी है और कह रही है, ''इस अल्लाह के मारे दुष्ट मुंशी को तो देखो; अभी अच्छी तरह दिन भी नहीं छिपा है कि दफ्तर बंद करके यहाँ से भाग गया। जब मुंशी ही नहीं है तो मल्लाह यहाँ क्यों ठहरेगा? ये किस समय आते हैं और कब जाते हैं, कोई देखने वाला है? सूबेदार मुबारक खान को तो कर वसूलने से ही फुर्सत नहीं है। रिआया मरे या जिंदा रहे, इससे उसे क्या? खूबसूरत, शानदार मस्जिद बनाकर उसे तो बादशाह को खुश करने से मतलब है कि उसका ओहदा और बढ़े।'' बुढ़िया चुप होकर फिर बोलने लगी, ''मुंशी से शिकायत करो तो कहता है तुम रोज–रोज पार जाती ही क्यों हो? अरे, पार नहीं जाएँगे तो खाएँगे क्या? हमारा कुम्हार का धंधा कैसे चलेगा? गाँव में ग्राहक ही कहाँ मिलेगा भला? फिर क्या खुद खाएँगे और क्या बच्चों को खिलाएँगे? अरे, मेरी तो बहू भी नहीं है, जो बच्चों को सँभाल लेती। नन्हें पोते–पोती भूख से बिलख रहे होंगे। हाय अल्लाह! मैं क्या करूँ?'' बुढ़िया धाड़ मारकर जोर–जोर–से रोने लगी।

अकबर द्रवित हो गए। वे आगे बढ़कर बोले, ''रोओ नहीं माई! मैं तुम्हें उस पार पहुँचाए देता हूँ।'' बुढ़िया ने रोना बंद किया और गठरी लेकर खड़ी हो गई। ''चल भाई! तू ही मुझे पार ले चल।''

अकबर ने इससे पहले कभी नाव नहीं खेई थी। बुढ़िया बादशाह के चप्पू पकड़ने के ढंग को देखकर बोली, ''अरे, तुझे तो चप्पू भी ठीक से पकड़ना नहीं आता। तू पार क्या ले जाएगा?''

''मैं सँभालकर धीरे–धीरे चलाऊँगा माई, तू घबरा मत।'' अकबर ने बुढ़िया को धीरज बँधाया। बुढ़िया के सामने और कोई दूसरा चारा भी नहीं था। 'मरता क्या न करता' बुढ़िया नाव में बैठ गई। बादशाह जी–जान से नाव खेने लगे। मगर नाव कभी इधर जाती तो कभी उधर। बुढ़िया का पारा ऊपर चढ़ने लगा। वह चिल्लाकर बोली, ''अरे अनाड़ी! नाव उल्टी ले जा रहा है या सीधी। ऐसे चलकर तू हमें कल रात तक पार पहुँचाएगा। और यह भी पता नहीं कि नाव मझधार में ही डुबो दे। मेरे बच्चे इंतजार कर रहे होंगे और तू है कि नाव लेकर खिलवाड़ कर रहा है।''

''माई! सब्र तो कर,'' बादशाह ने कहा। किन्तु बुढ़िया बोले जा रही थी, ''असल में तो इन बातों का जवाबदेह बादशाह ही होता है। मगर बादशाह तो मुबारक खान की चिकनी–चुपड़ी बातों से ही खुश हो लेगा। उसे असलियत कौन बताएगा कि यहाँ मस्जिद की नहीं, एक पुल की जरूरत है। इस पुल के बिना, पारवाले लोगों को कितनी परेशानी होती है। अरे भाई, पुल न होने से उस पार कोई वैद्य या हकीम भी जाने को तैयार नहीं होता।''

बुढ़िया फिर चुप हो गई। थोड़ी देर बाद उसने फिर बड़बड़ाना शुरू कर दिया, ''सूबेदार मुबारक खान हमारा हाकिम है, लेकिन उसे ये सब देखने की फुर्सत कहाँ है! उसे तो बस अपने कर वसूलने से मतलब है। लोग कह रहे हैं, यहाँ ऐसी मस्जिद बनेगी जो दुनियाभर में अपना सानी आप होगी। सुना है, आज अकबर यहाँ आया है। मगर कहीं वह मुझे मिल जाता तो मैं

उसे बताती कि ओ दुनिया जहान के मालिक, अगर तू सचमुच ही लोगों का भला करना चाहता है तो पहले यहाँ पुल बनवा, मस्जिद नहीं।''

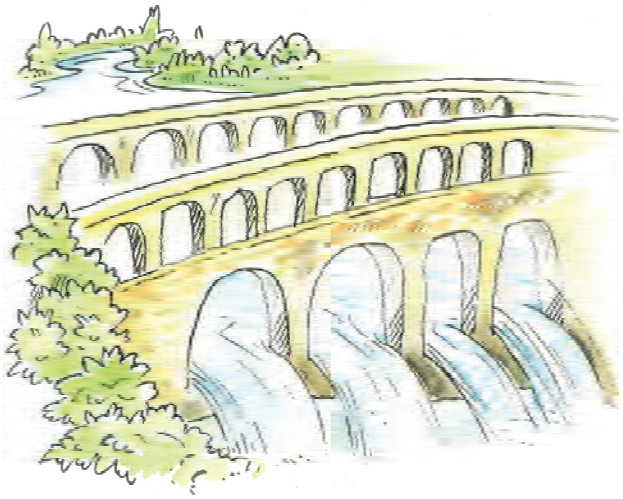

बुढ़िया देर तक इसी तरह बड़बड़ाती रही। चारों ओर अँधेरा छा गया। आसमान में तारे छिटकने लगे। अंत में नाव किनारे पर पहुँच ही गई। नाव में से लड़खड़ाती हुई बुढ़िया किसी तरह किनारे पर उतरी। अकबर ने उसे सँभालते हुए कहा, ''चलो माई! अँधेरा हो गया है। कहीं तुम्हें ठोकर न लग जाए, मैं तुम्हें तुम्हारे घर पहुँचा देता हूँ।'' यह कहकर अकबर ने बुढ़िया को उसकी गठरी समेत गोदी में उठा लिया। बुढ़िया घर पहुँची; उसके घर में कुहराम मचा था। बच्चे बिलख–बिलखकर रो रहे थे। उनका रोना देखकर बुढ़िया को मल्लाह पर बड़ा गुस्सा आया। उसने उतरते–उतरते उसके दोनों गालों को जोर–से खरोंच दिया और बोली, ''आज तूने मेरे बच्चों को भूखा मार डाला।''

पहले तो बादशाह की आँखों में खून उतर आया, पर उन्होंने अपने को सँभाला और मन में सोचा, 'मुझे तो इस बुढ़िया का अहसानमंद होना चाहिए कि इसने मुझे सच्चाई और असलियत का एक सबक सिखाया है।' ''शुक्रिया'' कहकर बादशाह चुपचाप वहाँ से चले गए।

अगले दिन शीशे में अपने खूबसूरत शाहीलिबास और रत्नजड़ित आभूषणों के साथ, अपने गालों पर खरोंच के निशान देखकर बादशाह मुस्करा दिए।

उन्होंने जौनपुर में पहले पुल बनवाया, मस्जिद बहुत बाद में।

शब्दार्थ

साध	–	तीव्र इच्छा	न्यौता	–	निमंत्रण
झमेला	–	झंझट	मुश्किल	–	कठिनाई
बाँछें खिलना	–	खुश होना	सुकून	–	शांति
दीनदारी	–	धार्मिकता	आदाब बजाना	–	सलाम करना
मल्लाह	–	नाव खेनेवाला	बिलखना	–	फूट–फूटकर रोना
चप्पू	–	नाव खेने के डंडे			
मझधार	–	बीच धार			
सब्र	–	धैर्य			
हाकिम	–	अधिकारी			
सानी	–	मिसाल / बराबरी			

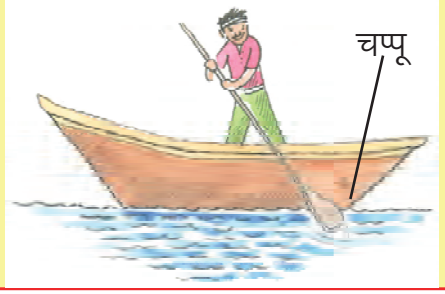

असलियत	–	सच्चाई	लिबास	–	पहनावा
अंदरूनी	–	भीतरी	रिआया	–	प्रजा
बेकरार	–	बेचैन	ओहदा	–	पद
अहसानमंद	–	अहसान माननेवाला			
इंतजार करना	–	रास्ता देखना, प्रतीक्षा करना			
दीन–ए–इलाही	–	दीनहीन पर दया करनेवाला			
गरीब नवाज	–	निर्धनों पर कृपा करनेवाला			
कुहराम	–	दुखभरी चीख–पुकार			
बेमिसाल	–	जिसकी कोई मिसाल/उदाहरण न हो			

प्रश्न और अभ्यास

प्रश्न 1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखो–

1. बुढ़िया के घर में कुहराम क्यों मचा था?
2. शीशे में अपने गालों पर खरोंच के निशान देखकर बादशाह क्यों मुस्कराए?
3. सूबेदार मुबारक खान बादशाह को क्यों खुश करना चाहता था?
4. बुढ़िया का पारा क्यों ऊपर चढ़ने लगा?
5. पुल न होने से लोगों को क्या परेशानी होती थी?
6. बादशाह ने बुढ़िया को घर तक क्यों पहुँचाया?
7. बुढ़िया को बादशाह पर क्यों गुस्सा आया?
8. अगर बुढ़िया बादशाह को पहचान लेती तो उसका उनके प्रति व्यवहार कैसा होता?

प्रश्न 4. खाली जगह में क्या आएगा? कहानी पढ़कर कोष्ठक में से सही शब्द छाँटकर लिखो।

क. ..... के पास बहुत कम समय था। (बुढ़िया/मुबारक खान/बादशाह)

ख. नक्शे को देखकर बादशाह की .....खिल गईं। (आँखें/बाँछें/बाहें)

ग. मुबारक खान ने ..... आदाब बजाते हुए कहा।
(अकड़कर/झुककर/तनकर)

घ. अरे .....! नाव उल्टी ले जा रहा है या सीधी।
(खिलाड़ी/अनाड़ी/सवारी)

ङ. यह भी पता नहीं कि नाव को ..... में ही डुबो दे। (नदी/सागर/मझधार)

भाषातत्व और व्याकरण

प्रश्न 1. निम्नलिखित मुहावरों के अर्थ चुनकर लिखो और मुहावरों का अपने वाक्यों में प्रयोग करो।

बाँछें खिलना, धाड़ मारकर रोना, कुहराम मचना, आँखों में खून उतरना, जमीन–आसमान एक करना,

गुस्सा करना, पूरी कोशिश करना, जोर से रोना

खुश होना, दुख से रोना–चिल्लाना।

समझो

- **इन वाक्यों को पढ़ो–**

क. उसने बादशाह को मस्जिद का नक्शा दिखाया। (मुबारक खान ने)

ख. वह बरसों से बेकरार था। (मुबारक खान)

ग. उसका ओहदा और बढ़े। (मुबारक खान का)

घ. चल भाई! तू ही मुझे पार ले चल। (बादशाह)

ङ. उन्होंने जौनपुर में पहले पुल बनवाया, बहुत बाद में मस्जिद। (अकबर ने)

इन वाक्यों में नाम के स्थान पर 'उसने', 'वह', 'उसका', 'तू', 'उन्होंने' शब्दों का प्रयोग किया गया है। ये सभी शब्द सर्वनाम हैं। **जो शब्द संज्ञा के स्थान पर प्रयुक्त होते हैं वे सर्वनाम कहलाते हैं।**

प्रश्न 2. नीचे दिए गए वाक्यों में रेखांकित शब्दों के स्थान पर सर्वनाम शब्दों का प्रयोग करो।

वाक्य– मुबारक खान को तो कर वसूलने से ही फुर्सत नहीं है।

क. बुढ़िया ने रोना बंद कर दिया।

ख. बादशाह मुबारक खान के व्यवहार पर प्रसन्न हुए।

ग. बादशाह ने मुबारक खान से पुल बनवाने के लिए कहा।

- "बुढ़िया को और कोई सहारा न था।" यह निषेधात्मक वाक्य है। वाक्य का भाव बिना बदले इसे विधिवाचक वाक्य में इस प्रकार लिखा जाएगा– बुढ़िया असहाय थी।

प्रश्न 3. इन वाक्यों को विधिवाचक वाक्यों में इस प्रकार बदलो जिससे उनके भाव न बदलें।

क. मैं झूठ नहीं बोलता।

ख. वह बदसूरत नहीं है।

ग. मैं आज कक्षा में उपस्थित नहीं रहूँगा।

घ. चंद्रशेखर आज़ाद कायर नहीं थे।

प्रश्न 4. निम्नलिखित शब्दों के हिन्दी पर्यायवाची शब्द लिखो–

नक्शा, मुश्किल, मौका, ख्याल, खुश, हालात, दुनिया, फुरसत।

- क. सब–के–सब बेमिसाल हैं।

  ख. वह न्यौते–पर–न्यौता देता चला आ रहा था।

  'सब–के–सब' का अर्थ है, संपूर्ण या पूरा। न्यौते–पर–न्यौता का अर्थ है, लगातार न्यौता देना।

प्रश्न 5. 'प्रश्न–पर–प्रश्न', 'धमकी–पर–धमकी', 'पेड़–का–पेड़', 'घर–का–घर', शब्द समूहों का अपने वाक्यों में प्रयोग करो।

- क. बेशक, नक्शा बहुत खूबसूरत है।

  ख. सब–के–सब बेमिसाल हैं।

  'शक' और 'मिसाल' में 'बे' जोड़कर 'बेशक' और 'बेमिसाल' शब्द बने हैं। 'बेशक' का अर्थ है जिसमें कोई शक न हो और 'बेमिसाल' का अर्थ है जिसकी मिसाल (उदाहरण) न हो।

प्रश्न 6. 'बे' जोड़कर कोई दो अन्य शब्द बनाओ और उनका अपने वाक्यों में प्रयोग करो।

रचना

- पुल बन जाने से नागरिकों को क्या लाभ हुआ होगा– इस विषय पर 10 वाक्य लिखो।
- नदी पार करने के लिए उपयोग में आने वाले साधनों के नाम लिखो।

योग्यता विस्तार

- कहानी को नाटक के रूप में तैयार करके कक्षा में प्रस्तुत करो।
- जनहित में मंदिर या मस्जिद के स्थान पर सड़क या पुल में तुम किसे महत्वपूर्ण मानते हो? इस बात पर आपस में चर्चा करो।
- इस कहानी को निम्न बिंदुओं के आधार पर तैयार कर कक्षा में प्रस्तुत करो –

  1. पात्र
  2. पात्रों का संवाद
     - अकबर का संवाद
     - बुढ़िया का संवाद
     - सुबेदार मुबारक खान का संवाद
  3. अभिनय करो –
     - बुढ़िया के रोने का
     - अकबर के चापू चलाने का

5MS7K1